पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

हिंदी साहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव एवं वैचारिक पृष्ठभूमि

रज्जन प्रसाद शुक्ल
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
ईमेल: rpshukla000@gmail.com
एवं

जया द्विवेदी
एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
के. बी. पी. जी. कॉलेज, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)
ईमेल: jayadewedi@gmail.com

शोध-सारांश : मार्क्सवाद का साहित्यिक आधार प्रगतिवाद है या यूँ कहा जा सकता है कि प्रगतिवादी विचारधारा का मूलाधार मार्क्सवाद या साम्यवाद है। मार्क्सवादी विचारधारा का उद्देश्य समाज में साम्यवादी व्यवस्था स्थापित करना, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह विद्रोह, हिंसा एवं क्रांति का पुरजोर समर्थन करता है। मार्क्सवादी साहित्य में शोषितों, वंचितों और श्रमिकों को शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित एवं उत्तेजित किया गया है। "मार्क्सवाद मानव सभ्यता और समाज को हमेशा से दो वर्गों शोषक और शोषित में विभाजित मानता है।" (गाबा, 2010, पृ. 343) माना जाता है कि साधन संपन्न वर्ग ने हमेशा से उत्पादन के संसाधनों पर अपना अधिकार रखने की कोशिश की तथा बुर्जुआ विचारधारा की आड़ में एक वर्ग को लगातार वंचित बनाकर रखा। शोषित वर्ग को इस षड्यंत्र का भान होते ही वर्ग संघर्ष की ज़मीन तैयार हो जाती है। वर्गहीन समाज (साम्यवाद) की स्थापना के लिए वर्ग संघर्ष एक अनिवार्य और निर्माणात्मक प्रक्रिया है।

सूचक शब्द: कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो, मार्क्सवादी, समाजवाद, प्रगतिशील, विचारधारा

मूल लेख

"मार्क्सवाद शब्द अंग्रेजी के 'मार्किसिज़्म' (Marxism) शब्द का पर्याय है।" (गाबा, 2010) श्रेय की प्राप्ति ही मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य रहा है। श्रेय का अर्थ है- कल्याण। मार्क्सवादी चिंतन के प्रमुख सिद्धांत सर्वप्रथम हमें 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' में मिलता है, जिसमें मार्क्स ने वर्ग-संघर्ष, पूंजीवाद के दोष, औद्योगिक संकट, मज़दूरों के संगठन, मजदूर पार्टियों के आविर्भाव, दलित मानवता के प्रति सद्भावना, स्वप्नलोकीय समाजवाद की निंदा, पूंजीपतियों द्वारा आत्महनन जैसे प्रमुख विचार प्रस्तुत किए, जो आगे चलकर हिन्दी साहित्य में पूर्णतः परिलक्षित होने लगा, जिसे प्रगतिवाद के नाम से अभिहित किया गया।

"मार्क्सवाद मूलतः उन आर्थिक राजनीतिक और आर्थिक सिद्धांतो का समुच्चय है जिन्हें उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स और व्लादिमीर लेनिन तथा साथी विचारकों ने समाजवाद के वैज्ञानिक आधार की पुष्टि के लिए प्रस्तुत किया।" (वर्मा, 2015, पृ. 497) मार्क्सवादी विचारधारा से अनुप्राणित साहित्य को प्रगतिवादी साहित्य के नाम से जाना जाता है। प्रगतिवादी साहित्यकारों ने साहित्य को मार्क्सवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार का साधन बना लिया। डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के अनुसार – "प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया गया वह साहित्यिक आंदोलन है, जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु सत्य को उत्तर छायावादी काल में प्रश्रय मिला और जिसने सर्वप्रथम यथार्थवाद की ओर समस्त साहित्यिक चेतना को अग्रसर होने की प्रेरणा दी।" (गाबा, 2010, पृ. 2)

हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद अर्थात मार्क्सवाद का सूत्रपात 1936 के आस-पास हुआ। रूस में प्रतिष्ठित साम्यवाद और पश्चिमी देशों में फैलता उसका प्रभाव भारतीय बुद्धिजीवियों के लिए प्रेरणा केंद्र बन रहा था। उस दौर में सम्पूर्ण भारत में राजनीतिक दासता पूंजीवाद के चरम पर थी। सामान्य जनता गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव एवं अपमान से त्रस्त थी। सन् 1935 ई. के आस-पास भारत में साम्यवादी आंदोलन प्रारम्भ हो गया था। पेरिस में 1935 ई. में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोशिएसन' नामक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का उदय हो चुका था, जिसकी एक शाखा की स्थापना सन् 1936 ई. में सज्जाद जहीर एवं मुल्कराज आनंद के प्रयत्नों से भारत में 'प्रगतिशील लेखक संघ' नाम से हुई। इसका प्रथम अधिवेशन लखनऊ में मुंशी प्रेमचंद की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रगतिशील साहित्य ने शोषण का विरोध किया और किसानों, मजदूरों के संघर्ष को प्रमुखता प्रदान की एवं सामाजिक विसंगतियों पर तीव्र प्रहार किया। मार्च, 1937 के 'विशाल भारत' में शिवदान सिंह चौहान का एक लेख प्रकाशित हुआ –"भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता। इस लेख में मार्क्सवाद, वर्ग-संघर्ष और भौतिकवाद की विस्तृत व्याख्या हुई और पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध वर्गवादी साहित्य-सर्जना की जरूरत बतायी गयी है।" (वार्ष्णेय, 2010, पृ. 15) सुमित्रानंदन पंत ने 'युगवाणी' में साम्यवाद के विषय में स्पष्ट रूप से अपने विचार व्यक्त करते हैं और उसे नवीनता का द्योतक मानते हैं।

हिन्दी साहित्य पर मार्क्सवादी विचारधारा के प्रभाव की प्रथम अभिव्यक्ति भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलनों के दौरान दिखी जब किसानों, श्रमिकों एवं विद्यार्थियों ने प्रत्यक्ष रूप से आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी करनी प्रारम्भ की। "मार्क्सवादी साहित्य-सिद्धांत तथा इस सिद्धांत के अनुसार रचे गए साहित्य को प्रगतिवाद कहना चाहते हैं और छायावाद के बाद की व्यापक सामाजिक चेतना वाले समस्त साहित्य को 'प्रगतिशील साहित्य' कहते हैं।" (सिंह, 2021, पृ. 66)

विश्व में मार्क्सवादी विचारधारा का उदय तीव्र वेग के साथ हुआ और इस विचारधारा ने सम्पूर्ण विश्व को बहुत तेजी से प्रभावित किया। इस विचारधारा ने सिर्फ यूरोप ही नहीं, बल्कि विश्व का कोई भी ऐसा देश नहीं था जो इससे अप्रभावित रहा हो। मार्क्सवादी विचारधारा ने संसार के प्रायः सभी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक चिंतन के साथ-साथ साहित्यिक चिंतन को प्रभावित किया। भारत उस समय ब्रिटिश हुकूमत का उपनिवेश था, जिसके शासनकाल में आम जनता का सर्वाधिक शोषण होता था। भारतीय समाज के प्रत्येक अंग पर मार्क्सवाद का प्रभाव पड़ा और हिन्दी साहित्य भी वैश्विक साहित्य की राह पर चल निकला या यूँ कहें की उस दौर से में मार्क्सवादी साहित्य एवं विचारधारा के प्रमुख केन्द्रों में एक भारत

था, जिसकी आवाज सम्पूर्ण मार्क्सवादी दुनिया में गूँजती थी। यूँ तो मार्क्सवाद का प्रभाव हिन्दी साहित्य के सभी विधाओं पर समान रूप से परिलक्षित होता है, लेकिन आधुनिक हिन्दी कविता एवं आधुनिक हिन्दी आलोचना पर सर्वाधिक दिखाई पड़ता है।

सामान्यतः हिन्दी कविता का मूल स्वर क्रांतिकारी भावना से ओत-प्रोत रहा है। आदिकाल में नाथों और सिद्धों की कविता में क्रांति भावना का उन्मेष दिखाई पड़ता है, जिसका विकास संतों की कविता में विस्तार से परिलक्षित होता है। भारतेन्दु युग में भारतेन्दु हरिश्चंद्र और उनके सहयोगियों में क्रांति की चिनगारी अंदर-अंदर सुलगती दिखाई पड़ती है। भारतेन्दु युग के समान द्विवेदी युग में भी क्रांति भावना दिखाई पड़ती है। उसके उपरांत पूंजीवाद ने साहित्य जगत (छायावाद) को भी ग्रसित कर लिया। छायावादी कविता में मार्क्सवादी अंतर्वेदना छिपी हुई थी। छायावादी अंतर्वेदना ही कार्ल मार्क्स से प्रेरणा के माध्यम से प्रगतिवादी साहित्य में वर्ग-संघर्ष की कहानी के रूप में प्रस्तुत हुई। प्रगतिवाद का मूल स्वर मार्क्सवाद रहा, यही कारण है कि विद्वानों ने मार्क्सवाद और प्रगतिवाद को एक ही माना है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार –"प्रगति का अर्थ है – मार्क्सवाद ढंग से आगे बढ़ाना।" (सिंह, 2011, पृ. 59) रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार "प्रगतिवाद की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसने काव्य में राजनीति कि स्थापना की है।" (सिंह, 2011, पृ. 59) विद्वानों के अनुसार हिन्दी कविता का प्रगतिवाद मार्क्सवाद की ही साहित्यिक अभिव्यक्ति है। सूक्ष्मता से अध्ययन करने के उपरांत इस कथन की सत्यता सिद्ध होती है। प्रगतिवादी युग का सम्पूर्ण शरीर मार्क्सवादी विचारधारा के ताने-बाने से ही बुना हुआ है।

मार्क्सवादी/प्रगतिवादी साहित्यकारों ने आर्थिक रूप से अति पिछड़ों के जीवन की समस्याओं का बड़ी सूक्ष्मता से वर्णिन किया है। निर्धनों की सबसे बड़ी समस्या भूख, अछूत और मानसिक पीड़ा रही है। इस समस्या का चित्र रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' ने अपनी रचना 'सर्वहारा' नामक कविता में बहुत ही मार्मिक तरीके से चित्रित किया है –

"और यहीं परिवार खड़ा है,
भूखे शिशु अकालीत माता
बच्चे से जिसको बस केवल,
पैदा कर देने का नाता"
('अंचल', 1995)

निर्धनों की सबसे बड़ी समस्याओं में एक समस्या घर की है। एक परिवार टूटी-फूटी झोपड़ी में कई लोग एक साथ रहने को मजबूर थे। सर्दी, गर्मी और बरसात सभी मौसमों में उसी झोपड़ी में रहने को मजबूर थे, किन्तु बरसात आने पर उनकी समस्या कितनी भयानक हो जाती है, उसको सिर्फ भुक्त-भोगी ही महसूस कर सकता है। वर्ग–वैषम्य, आर्थिक विषमता, पूँजीपतियों के शोषण, शोषित वर्ग की दीनता, वर्तमान व्यवस्था के प्रति असंतोष एवं विद्रोह आदि विषयों सशक्त उदाहरण दृष्टव्य हैं :

"करि श्रम तीसों दिन मरत, भरत न भूखों पेठ !
कहौ कहाँ ते लाइये पटवारी तब भेंट !
सुनियत कुकुर आपके दूध जलेबी खाहिं।
हम सब कृषक मजूर हा ! कुकरहू सम नाहिं।" (करुण, 1997)

इस प्रकार की अनेक समस्याओं में उलझा हुआ भारतीय किसान तथा निम्न वर्ग के लोग, गरीब मजदूर फिर भी अपने पास निराशा को आने भी नहीं देता है। गरीबों की सबसे प्रमुख समस्या निरक्षरता थी, जिसके कारण न तो अपने साथ हो रहें अत्याचार और न ही महिलाएं अपने चरित्र की रक्षा कर पाती थी। सामंतवादी एवं पूंजीपति वर्ग गरीबों का मानसिक और शारीरिक शोषण खूब किया। गरीब युवतियाँ समाज में दिन–प्रति-दिन धन के लोभ में प्रवंचित होने लगती है और अपना तन-मन लूटा कर आगे का सम्पूर्ण जीवन मानसिक पीड़ा से तड़पती रहती थी।

हिन्दी कविता के माध्यम से प्रगतिवादियों ने समाज की सबसे बड़ी समस्या भूख के दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला। उनके लिए सुनहरे भविष्य का सपना मात्र एक कल्पना है – असलियत तो यह है उसका परिवार भूख से तिलमिलाते हैं और अंत में एक पिता या घर का मुखिया खुद परिवार को जहर पिलाएंगे, फिर खुद। कवि ने एक निर्धन निरीह कृषक की स्थिति का वास्तविक वर्णन किया है।

“जागो। अभागे !
जगाने आया है, आज तुम्हें भूमिकम्प ।
रक्त मांसहीन कंगालदीन,
जग गया भाग्य देवता तुम्हारा ।
इस दावाडोल स्थिति में
जग की
कहता भूडोल आज ।
छेड़ो प्रमत्त वीर, पागल
नृत्य – युक्त छंदों में
सर्वनाश गान, महा – गान ;
बोलो – जय !
देखों हिली नीवें पूँजीवाद की ;
निपतित – सी लुठित – शिर
अनपवाद।” (सिंह, 1985)

प्रगतिवादी कवि ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं, जहां वर्ग भेद न हो। वर्ग-संघर्ष का सापेक्षित चित्र हमें प्रगतिवादियों में सर्वाधिक प्राप्त होता है, जिसमें स्थिति की भयंकरता का रूप सामने प्रस्तुत होता है। वस्तुतः ये समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते हैं। धर्म, जाति, भाषा ऊँच-नीच का वर्ग भेद समाप्त होने पर ही ऐसे समाज का निर्माण हो सकता है। प्रगतिवादी कवि उस व्यवस्था को नष्ट करना चाहता है जिसमें अमीरों के कुत्ते तो सुविधाएं भोग रहे हैं और गरीब का बालक भूख से रो रहा है। पूंजीवादी और कृषक के जीवन में जो सापेक्षित अंतर है, एक ओर दूध और वस्त्र का आनंद लेते धनिकों के कुत्ते और दूसरी ओर भूख से बिलखते माँ से चिपककर ठिठुरते हुए जाड़े की रात काटते निर्धनों के मासूम बच्चे……. भारत माता के आँगन में निर्धनों के जीवन का उसका अत्यंत मार्मिक चित्रण दिनकर की कविता ‘हुंकार’ में चित्रित है -

“श्वानों को मिलता दूध वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं,

माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाडों में रात बिताते हैं।
युवती के लज्जा वसन बेच, जब ब्याज चुकाये जाते हैं,
मालिक जब तेल-फुलेलो पर, पानी सा द्रव्य बहाते हैं।
पापी महलों का अहंकार, देता तुझको तब आमंत्रण.........।"

(दिनकर, 2015, पृ. 46)

सामाजिक एवं आर्थिक क्रांति मार्क्सवाद की सबसे बड़ी देन रही, जिसने सम्पूर्ण विश्व में आमूलचूल परिवर्तन किए। क्रांति भी उनकी दृष्टि में एक साधना है, संघर्ष ही इस विचारधारा का मूलमंत्र है। उस क्रांति की प्रतिध्वनि आधुनिक साहित्य में भी परिलक्षित हो रहा है। जिस प्रकार मार्क्सवाद ने उस काल के अनुरूप प्रश्न खड़े किए और उसके समाधान के लिए वैज्ञानिक समाजवाद का प्रतिपादन भी प्रस्तुत किया जिसका चित्रण हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों ने परिस्थिति अनुरूप साहित्य में भरपूर प्रयोग किया है। प्रगतिवादी युग की सम्पूर्ण काव्य महत्वपूर्ण रही है। साहित्यकारों ने पूंजीवाद के दोषों का वर्णन किया है और साथ ही वैज्ञानिक समाज के प्रवर्तन पर भी बल दिया है। इस युग के कवि स्वतः मार्क्सवाद से प्रभावित थे तथा मार्क्स के प्रति प्रत्यक्ष रूप से श्रद्धा प्रकट की है। *'कंट्रीब्यूशन टू ए क्रिटिक ऑफ पॉलिटिकल इकॉनमी'* की भूमिका में कार्ल मार्क्स ने समाज विश्लेषण की संभावित प्राक्कलन को स्पष्ट करते हुए लिखा है- "व्यक्ति द्वारा विकसित की गयी सामाजिक उत्पादन व्यवस्था में, वह कुछ पूर्व निर्धारित सम्बन्धों में रहता है, जो उसकी इच्छा से परे होते है। ये संबंध उत्पादन संबंध होते हैं, जो सामाजिक विकासक्रम से लगातार तब्दील होते रहते हैं। इन उत्पादन सम्बन्धों का कुल योग ही समाज की आर्थिक संरचना का निर्माण करता है। इसी वास्तविक आधारभूमि पर विधिक और राजनीतिक अधिरचना का निर्माण होता है, और सही सामाजिक चेतना के विभिन्न संस्तरों को अभिव्यक्त करता है।" (अमरनाथ, 2020, पृ. 279)

इस युग के साहित्यकारों का दृष्टिकोण यथार्थवाद एवं भौतिकवाद के तरफ अधिक है। जीवन की विषमताओं एवं असंगतियों के प्रति घृणा व विद्रोह की भावना तीव्र हो जाती है। शहर के वैभवता के स्थान पर ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण, उच्च एवं निम्न वर्ग, पूंजीपति-मजदूर वर्ग की तुलना प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है। तत्कालीन वर्तमान व्यवस्था के प्रति असंतोष और विद्रोह की भावना को जागृत करने का लक्ष्य मार्क्सवाद क्रांति का प्रमुख अंग है। साम्यवाद के प्रति उस समय के कवियों ने भी अपनी दृढ़ आस्था व्यक्त किया गया है, साथ ही साथ क्रांति का भी आह्वान बराबर तत्कालीन साहित्यकारों द्वारा किया गया। केदारनाथ अग्रवाल की एक कविता बड़ा ही मार्मिक चित्रण मिलता है :

"साम्राज्यवाद के गुरगे
साम्राज्यवाद के कुत्ते
भू – कर उगाहने वाले
दल्लाल दुष्ट धरती के
आना – धेला के जमींदार ;
लाला साहब पटवारी जी,
××××××××××××
काटो काटो काटो करलो, साइत और कुसाइत क्या है !

मारो मारो मारो हँसिया, हिंसा और अहिंसा क्या है !" (गुप्त, 2015, पृ. 133)

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य पर भी मार्क्सवाद का प्रभाव बखूबी पड़ा है। जहाँ यशपाल विशुद्ध मार्क्सवादी कथाकार हैं वहीं बाबा नागार्जुन ने उनका भरपूर साथ निभाया है तथा अपने साहित्य से मार्क्सवादी विचारधारा को पोषित किया है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मिथिलांचल के जनजीवन को बड़ी सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है। मार्क्सवाद की छाया का मुखर प्रभाव रेणु के कथा-साहित्य पर पड़ा। प्रगतिवादी (मार्क्सवादी) साहित्यकार जहां निर्धन, शोषित एवं पद दलितों की आवाज बनकर उभरा वहीं उसमें अतिशय नग्नता एवं कामुकता की भी अभिव्यक्ति है। स्थूल भौतिक वासना पर मार्क्स उतना बल नहीं दिया जितना कि हिन्दी साहित्यकारों ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। "मार्क्सवादियों की दृष्टि में समाज का बुनियादी आधार आर्थिक है; साहित्य, कला, संगीत,राजनीति, दर्शन कानून आदि ऊपरी ढाँचे (सुपर स्ट्रक्चर) हैं। किन्तु परिवर्तन की प्रक्रिया काफ़ी जटिल है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया को ऐतिहासिक भौतिकवाद के सहारे उसकी विभिन्न मंजिलों- आदिम साम्य व्यवस्था, सामंतीय प्रणाली और पूंजीवादी व्यवस्था – के आधार पर समझने की कोशिश की गयी है।" (सिंह, 2021, पृ. 85) देश आजाद होने के लिए आतुर हो रहा था।भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था, उसी समय मार्क्सवादी प्रभाव भारतीय जनमानस पर प्रत्यक्ष रूप से दिखने लगा था, लेकिन उस समय के कवियों ने साम्यवादी प्रशासन की उन नीतियों का गहरा व्यंग्य किया जो अपने नागरिकों को सोचने की भी स्वतन्त्रता प्रदान नहीं करता।

"सोशलिस्ट स्टेट एक माँ है
बूढ़ी और डरपोक
अपने बच्चों से बहुत प्यार करती है
उनके खाने -पीने और ओढ़ने – पहनने की
पूरी व्यवस्था भली – भाँति करती है
पर लगातार डरती है
की कहीं पड़ोसी उसके बच्चों को बहका न दें
इसलिए उन्हें गली – मुहल्ले में घूमने नहीं देती
किसी पड़ोसी से बात नहीं करने देती।" (गुप्त, 2015, पृ. 143)

आधुनिक युग की सर्वमान्य समीक्षा प्रणाली मार्क्सवाद से सर्वाधिक प्रभावित है। मार्क्सवादी आलोचना पद्धति इस बात की खोज नहीं करता कि रचना का प्रेरणा तत्व कोई कला या साहित्य से संबन्धित है, बल्कि वह उन परिस्थितियों को प्रधान मानता है, जिसमें साहित्यकार जन्म लेता है। उनका मानना है कि युग कि आर्थिक परिस्थितियाँ एवं राजनीतिक आन्दोलन साहित्यकार को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती है। *'Literature and Marxism'* नामक पुस्तक में मार्क्स ने लिखा है –"Matter is not a product of consciousness but consciousness itself is merely the highest product of matter." मार्क्सवादी समीक्षा इस विचार से प्रभावित होकर विचारों और चिंताओं को भी वस्तु तथ्य से अलग करके नहीं देखा, बल्कि उनकी धारणा है कि वास्तविक साहित्य वहीं है जिसमें युगीन जनक्रांति का चित्रण हो तथा वर्ग-संघर्ष की समस्याओं को प्रमुखता प्रदान की गई हो।

मार्क्सवादी युग का प्रभाव जितनी तेजी से हिन्दी साहित्य पर पड़ता है, उतनी ही तेजी से खत्म भी होता है। इसकी असफलता के कई कारण थे। भारतीय आध्यात्मिक दर्शन का पूर्ण बहिष्कार एकाएक कर देना बहुत कठिन था। मार्क्स स्वयं मानते हैं- "कोई भी व्यवस्था या पद्धति अंतिम नहीं होती, एक के बाद एक अच्छी व्यवस्था या पद्धति का विकास होता रहता है।" (गुप्त, 2015, पृ. 143) हिन्दी में मार्क्सवादी सिद्धांतों आधारभूत संरचना प्रदान करने वालों में डॉ. रामविलास शर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त, शिवदान सिंह चौहान, अमृतराय आदि का नाम उल्लेखनीय है। इन आलोचकों ने स्वतंत्र रूप से अपने मार्क्सवादी मतों का प्रतिपादन किया, इन्होंने परंपरागत आलोचना पद्धति को गौण माना है और अपनी उपयोगितावादी पद्धति को विशेष महत्व प्रदान किया। इसमें कोई संदेह नहीं की इस पद्धति ने आलोचना के क्षेत्र में एक नवीन मार्ग को प्रशस्त करती है, जिसका निर्धारण गुण-दोष प्रतिमान एवं युग-बोध के अनुरूप होता है। जो आलोचना पढ़ती युग-बोध को आदर्श मानकर चलेगी, वह निश्चित रूप से उदात्त होगी। यहीं कारण है कि मार्क्सवादी आलोचना पद्धति दिन-प्रतिदिन प्रतिष्ठा को प्राप्त होती जा रही है। मार्क्सवादी विचारधारा ने आधुनिक हिन्दी साहित्य कि सभी विधाओं को प्रभावित किया तथा हिन्दी साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

गाबा, ओम प्रकाश.(2010). *राजनीति सिद्धांत की रूपरेखा.* मयूर पेपरबैक्स.

वर्मा, धीरेन्द्र .(2015). *हिन्दी साहित्य कोश* भाग-1. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड.

वार्ष्णेय, डॉ. लक्ष्मीसागर. (2010). *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

सिंह, बच्चन(2021). *आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

सिंह, नामवर (2011). *आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

नगेन्द्र. (1949). *विचार और विवेचन. दिल्ली: गौतम बुक डिपो.*

दिनकर, रामधारी सिंह .(2015). *मिट्टी की ओर.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

प्रसाद, सुरेन्द्र. (1985). *हिन्दी की प्रगतिवादी कविता.* इलाहाबाद: चित्रलेखा प्रकाशन.

अमरनाथ .(2020).*हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली.* नई दिल्ली: राजकमल.

गुप्त, गणपतिचंद्र .(2015). *हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास.* इलाहाबाद: लोकभारती.